इक्कीसवी शती में चित्रित नारी जीवन

प्रा. डॉ. रामचंद्र लोंढे, क्रांतिसिंह नाना पाटील महाविद्यालय, वाळवा.

भारत की आझादी के बाद का बदलता समय सामाजिक परिस्थिति, स्त्री मुक्ती आंदोलन, और इस पार्श्वभूमीपर स्त्री का बदलता जीवन, उसका कर्तव्य, उसका कार्य सब बदलता नजर आता हैं।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में नारी को देवी का दर्जा दिया जाता है। वाल्मीकि रामायण में कहते है, ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवतां– अर्थात जिस ठिकाण पर नारी की पूजा की जाती है, वही देवताओं का निवास होता है।'' [१] परंतु भारतीय नारी का जीवन प्राचीन समय सें आज तक इक्कीसवी सदी तक धीरे–धीरे बदलता गया है।

स्त्री विमर्श को लेकर हमारे यहॉ यानी हिन्दी समाजं में बहुत सी भ्रांतियॉ है। सबसे बडी भ्रांति यह है कि स्त्री विमर्श को वीमेन लिब ने स्त्री मुक्ति का पर्याय मान लिया गया है। मुक्ति में भी स्त्री के लिए देह की मुक्ति को सर्वोपरि मुक्ति माना गया है। स्त्री सशक्तीकरण – स्त्री जागरूकता का प्रसार करने के लिए एक कारगर औजार है। हमारे समाज में नारी मुक्ति के बारे में दो मिथ प्रचलित है– ''एक तो यह कि नारी मुक्ति का तात्पर्य पुरूष वर्चस्व या पुरूष अधिपत्य से मुक्ति है। दरअसल यह मुक्ति सामाजिक संरचना और रूढिगत संस्कारों से है। पुरूष वर्चस्व तो उस सामाजिक संरचना की ही एक प्रशाखा है जिसके पनपने और फलने – फूलने के लिए पूरा का पूरा सामाजिक – सांस्कृतिक माहौल 'टेलरमेड' है।''[२]

१९८० के दशक के उपरान्त आज तक के स्त्री निर्मित कथा साहित्य को यदि समूचे व्यापक परिदृश्य में देखे तो इसके विषय अत्यन्त वैविध्यपूर्ण एवं विशद प्रतीत होते है। आधुनिक नारी बोध को प्रकट करने वाला हिंदी महिला कथा साहित्य लेखन समसामायिक जीवन स्थितियों जटिल अनुभूतियों और साहसिक कृत्यों का प्रतिबिंब है। इस लेखन का सारोकार जहॉ हिंदी साहित्य में परिवर्तित होती प्रवृत्तियों से जुडा रहा है, वही यह लेखन नारी जीवन के मुक्तभोगी अनुभवों का सहयात्री भी रहा है। समकालीन हिंदी साहित्य समसामायिक भारतीय समाज की ही उपज है। समकालीन परिदृश्य में नारी की खुद की सोच और इसके प्रति समाज के जरिये में जबरदस्त बदलाव हुआ है जिसकी समर्थ अभिव्यक्ति एवं प्रवृत्तियों की पहचान कथा– ''साहित्य के माध्यम से कायम हुई है। महिलावादी चेतना का उभार आधुनिक बौध्दिक विमर्श से ही संबंध हुआ है।''[३]

सच्चा नारी वाद से स्त्री की संवेदनशीलता के यथोचित महिमा और बतौर मनुष्य उसकी सभी शक्ति और मर्यादा सहित उसके गौरव की पति और परिवार समाज द्वारा प्रेमपूर्ण स्वीकृति अभिप्रेत है। [४] अभाव से पूर्णता तक, परतंत्रता से स्वतंत्रता तक सामान्यत: स्त्री जीवन में दु:ख ही सहन करती है।

जब भारत परतंत्र में था तब भारतीय समाज में नारी जीवन भी परतंत्र ही था। समाज में सती प्रथा, बालविवाह, बहुविवाह, बालहत्या, विधवाओं की समस्या, आदि प्रथाऍ तथा कई कुरीतियॉ एवंम् नारी समस्याऍ थी। राजा राममोहनरॉय समाज सुधारकों में अग्रणी थे। उन्होंने हिंदू समाज की सती–प्रथा जैसी कुरीति बंद करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ''ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने सन १८६० में लडकी के लिए विवाह की न्यूनतम आयु दस वर्ष स्वीकृत करवाई। यह १९ वी शती का नवोत्थान भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना थी। २० वी शती में नारी को बहुत से अधिकार दिये, जिससे नारी अपनी प्रगति कर सके।''[५]

आधुनिक काल में स्त्री निर्मित कथा साहित्य को यदि समूचे व्यापक परिदृश्य में देखे तो इसके विषय अत्यन्त वैविध्यपूर्ण एवं विशद प्रतीत होते है। आधुनिक नारी बोध को प्रकट करनेवाला हिंदी महिला कथा साहित्य लेखन समसामायिक जीवन स्थितियों की जटिल अनुभूतियों और साहसिक कृत्यों का प्रतिबिंब हैं। इस लेखन का सरोकार जहॉ हिंदी

साहित्य की परिवर्तित होती प्रवृत्तियों से जूडा रहा है, वहीं यह लेखन नारी जीवन के मुक्तभोगी अनुभवों का सहयात्री भी है।

जब हिंदी कथा साहित्य का जिक्र आता है तो नितान्त भिन्न, वरिष्ठ लेखिका सशक्त हस्ताक्षर कृष्णा सोबती की रचनाओं का जिक्र होना जरूरी है। उनकी ''मित्रो मरजानी' की मित्रों हो या 'सूरजमुखी के अंधेरे की' बलात्कार पीडिता नायिका अपनी—अपनी तरह से साहसी, प्रगतिशील सोच की पहचान बनाती हुई स्त्रियॉ है।''[६]

जिस समाज में नारी शिक्षित होती है उस राष्ट्र की प्रगति अधिक तेजी से होती है यह यथार्थ चित्रण था। महात्मा फुले से लेकर ऍनी बेझंट तक अनेक समाज सुधारकोनें नारी शिक्षा का महत्त्व समाज को समझाकर समाज में जागृती की। समाज सुधारक ऍनी बेझंट ने नारी और पुरूष को पंछी के दोनों पंखो के समान माना है। ''आकाश में उंची उडान भरने के लिए पक्षी के दोनों पंख समान रीति से समर्थ होने चाहिए। उसका एक भी पंख अगर कमजोर हो जाये तो वह उडान नहीं भर सकता''। [७] समाज को प्रगति के लिए पुरूषों के बराबर नारी को भी शिक्षित करना चाहिए।

मैत्रेयी पुष्पा का 'विजन' यह उपन्यास २१ वी सदी में अर्थात २००२ में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में महिला डॉक्टारों का मानसिक तथा शारीरिक शोषण और उसकी सामाजिक स्थिति का वर्णन किया है। विजन उपन्यास में दो नारियों के प्रकार दिखाई गये है। एक प्रकार में वह व्यवस्था के चक्रव्यूह में फॅसी नारी और दूसरे प्रकार में वह विद्रोही नारी है। पहले प्रकार में आनेवाली नारी है। ''डॉ. नेहा शरण और दूसरे प्रकार में डॉ. अभा द्विवेदी । आभाने पति की आज्ञाकारक नहीं बल्कि सहचारिणी होना पसंद किया। इस कारण पति उसे छोडकर चला गया। किंतु स्वाभिमानी और विद्रोही व्यक्तित्व वाली आभाने स्वयं अपने पति को तलाक दिया।'' [८] इससे हमें नारी किस प्रकार व्यवस्था और पुरूषों के जाल में फॅसी है यह समझता है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास में २१ वी शती का वास्तविक चित्रण किया है।

'शेषयात्रा' उपन्यास के पूर्वार्ध में, ''अनुका एक पारम्पारिक भारतीय नारी के रूप में उभरकर आयी है तो उत्तरार्ध में आधुनिक अनु दोनों बार प्रणव के गलत निर्णय का शिकार बनती है।'' [९] आज की नारी अपने अनुभव से सिखना चाहती है। भले ही उसे संकट में फॅसना पडे मगर इस हालत में भी उसे मुक्ति का अहसास मिलना चाहिए।

इसप्रकार २१ वी शती में २० वी शती का ही प्रभाव दिखाई देता है। आझादी के बाद का बदलता समाज, व्यवस्था, नारी जीवन, स्त्री मुक्ती आंदोलन, नारी का शिक्षित होना। अन्याय के विरूध्द विद्रोह करना, अपना अस्तित्व समाज के सामने लाना, पुरूषों के बराबर काम करना। यह सब नारी प्रगति का उन्नयन का साहित्य है। जो हमारे समाज का यथार्थ चित्रण करता हैं।

संदर्भ

१. डॉ. कर्वे स्वामी (संपा) स्त्री विकासाचे नवे क्षितीज, प्रतिमा प्रकाशन, प्रथमावृत्ती २००८ पुणे, पृ.५७५
२. राजापुरे—तापस पुष्पलता, १९८० नंतरच स्त्री, निर्मित कथनपर साहित्य, शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपूर, पृ. २४३
३. वही
४. वही पृ.१८८
५. आर. शरण, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ. ३१९
६. राजापुरे— तापस पुष्पलता तत्रैव, पृ. २४४
७. डॉ. पांडुरंग पाटील, ''देवेश ठाकूर और उनका उपन्यास साहित्य पृ. ७३
८. जदवानी जया, 'कुछ छूट जाता है, पृ. ८१
९. प्रियवंदा उषा, शेषयात्रा, पृ. ११